सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

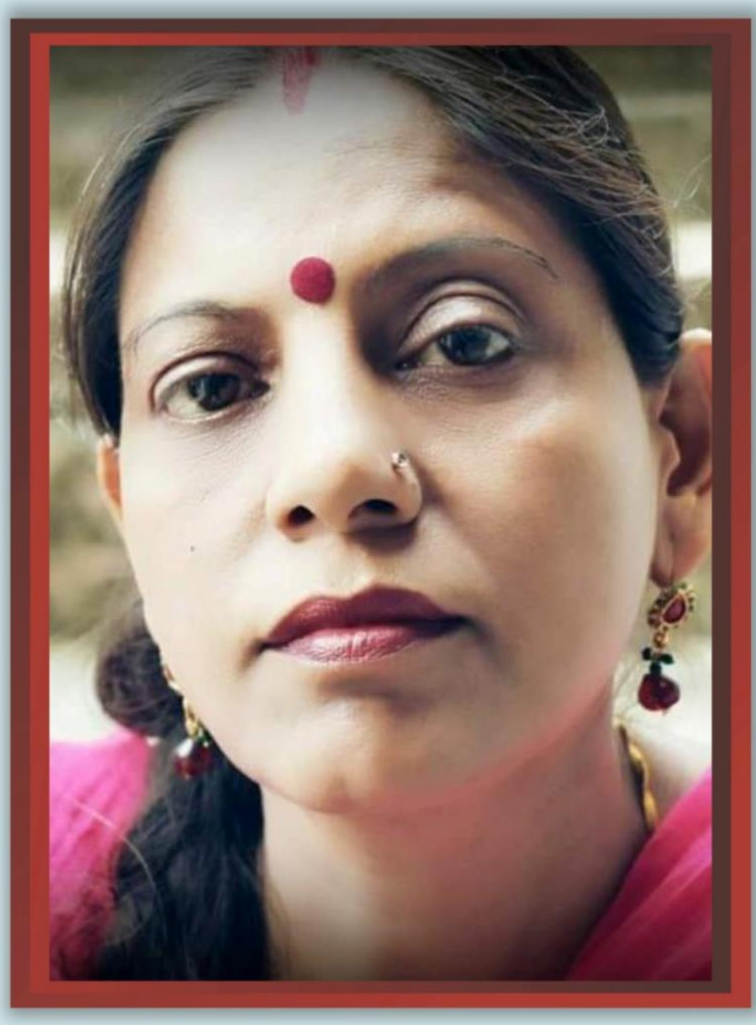

केन्द्रीय रचनाकार

• रचना सक्सेना

सृजक-सृजन-समीक्षा

रचना सक्सेना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

रचना सक्सेना का परिचय

नाम --श्रीमती रचना सक्सेना
माता का नाम--स्व.श्रीमती सरोज सक्सेना
पिता का नाम --श्री सूरज प्रसाद सक्सेना
पति/पत्नि का नाम --श्री संजय सक्सेना
जन्मतिथि --27/5/1969 -बहराइच,उ०प्र०
शिक्षा---एम०बी०एड ,संगीत प्रभाकर (सितार)
कार्यक्षेत्र --ग्रहणी
विधा -(गद्य,पद्य) कविता ,कहानी, लघुकथा
ईमेल-- rachnasaxena13@gmail.com
मो. (यदि देना चाहें)7376290559
प्रकाशन --कई पत्र पत्रिकाओ मे

प्रकाशन

1- जे0 एम0डी0 पब्लिकेशन द्वारा -----
1-भारत के प्रतिभाशाली हिन्दी रचनाकार पुस्तक मे दो कविताऐ
2- भारत के प्रतिभाशाली हिन्दी
कवयित्रियां पुस्तक मे दो कविताऐ
3-काव्य अमृत पुस्तक मे दो कविताऐ
2-रंगोली पत्रिका लखीमपुर के हर एक अंक मे मेरी कविताओ का प्रकाशन,
पंखुड़ी पत्रिका उत्तराखण्ड मे छपी मेरी कविता "अपनी प्रतिभा करो साकार'
3-रुहेलखण्ड प्रकाश हिन्दी साप्ताहिक बरेली,प्रतिक्षण टाइम्स बहराइच,कायस्थ रश्मि बरेली आदि मे रचनाओ का प्रकाशन,
कनाडा से निकलने वाली अमरजीत सिंह कूके की प्रत्रिका मे प्रकाशन

सम्मान --

1 -साहित्य एवं सांस्कृतिक मंच (हिन्दी साहित्य शोध अकादमी,राजस्थान) द्वारा फेसबुक साहित्य पहेली क्रमाँक --9 मे सर्वश्रेष्ठ साहित्य सम्मान।

2-जे .एम.डी.पब्लिकेशन द्वारा कई बार सम्मानित

लेखन का उद्देश्य --शौक ,और हमारी सामाजिक और पारिवारिक समस्याओ से प्रभावित परिस्थितयाँ।

आत्मकथ्य

उत्तरप्रदेश के जिला बहराइच के काजीपुरा मोहल्ले मे 27/5/1969 मे जन्म लिया ।पिता सूरज प्रसाद सक्सेना गाँधी इण्टर कालेज बहराइच मे प्रधानाचार्य पद पर आसीत थे और माँ सरोज सक्सेना एक ग्रहणी थी ।पाँच बहन और एक भाई के बीच मै रचना सक्सेना दो बहन और एक भाई से छोटी हूँ।महाजनी शिशु मंदिर मे प्राथमिक शिक्षा,तारा महिला इण्टर कालेज से इण्टर और महिला महा विद्यालय से स्नाकोत्तर करके किसान डिग्री कालेज से एम.ए. और बी.एड की डिग्री प्राप्त की। कलात्मक और रचनात्मक कार्यो मे रूचि होने के कारण पेन्टिग,सिलाई कढ़ाई बुनाई, पाककला ,ग्रह सज्जा , ब्यूटीशियन आदि सभी क्षेत्रो मे ज्ञान अर्जित किया और इन सभी को अपने शौक का हिस्सा बना लिया ।संगीत मे रूचि होने के कारण सितार मे प्रभाकर भी किया। लेखन कार्य मे बचपन से ही रूचि रही ।नौ वर्ष की आयु मे पहली कविता लिखी " फूल लगते है प्यारे प्यारे " । घर मे माँ पिता तथा अन्य सभी सदस्यो द्वारा प्रोत्साहन देने के कारण कहानियो और कविताओ का लेखन जारी रहा ।धीरे धीरे रचनाओ और अनेक लेखो का प्रकाशन समाचार पत्रो मे भी होने लगा। किन्तु 1997 मे संजय सक्सेना के साथ इलाहाबाद मे विवाह हो जाने के पश्चात घर की परिस्थिति और माहौल न मिलने के कारण लेखन कार्य पूर्णरूप से समाप्त हो गया।किन्तु 2015 मे एक बार फिर कविता लेखन के प्रति रूझान पैदा हुआ और तब से बराबर कविताओ का सृजन हो रहा है और अब करीब २५० कविताओ का सृजन हो चुका है ।गद्य मे भी रूचि होने के कारण लघुकथा और कहानी लेखन मे भी लेखन कार्य जारी है ।

"सृजक का सृजन"

घुट जाता है दम

पीने से प्यास नही बुझती, घुट जाता है दम,
उगलने से बुझती है आग, पर जलते है हम।

किश्ती किस ओर चले,
सोचती हूँ जब मै,
उलझ जाती वे पतंगे,
खीचती जो डोर मै
हवाओ के रूख से ,
अपरिचित हूँ मै ,
भीग जाती है पलके,
न भीगते है हम
पीने से प्यास नही बुझती,
घुट जाता है दम।

कदमो को बढ़ने से मतलब,
चलती ही रहूँगी,
दोराहो पर भटकूँगी जबजब,
सभंलती ही रहूँगी,
लहरो को निहारती हुई
आगे बढ़ती हूँ मै,
बह जाता है काजल सब,
अचम्भित रह जाते हम,
पीने से प्यास नही बुझती,
घुट जाता है दम।

कशिश रह जाती है कोने मे,
और पड़ते है छाले,
जलन ऐसी जो न रोने से,
दाग दिखते है काले,
कमल ढूढ़ने को प्रेम का,
छटपटाती हूँ मै,
अक्सर खुद को खो जाने से,
डर जाते है हम,
पीने से प्यास नही बुझती,
घुट जाता है दम।

घर बेगाना हो गया

पत्तियाँ सूखी और मौसम का बहाना हो गया,
आँचल भी पराया आज ,अब घर बेगाना हो गया।

महका था चमन उनका,फूल और काँटो से हिलमिल,
एक चुभोता था कभी,दूसरा महकाता था घुलमिल।
धूप सहकर छाँव बनना,बीता जमाना हो गया,
रूठ गई शाखाऐं अब तो ,घर बेगाना हो गया।

जिनके झुरमुट मे कभी,पक्षियो के नीड़ थे,
पथिको के तन से पसीना ,पोछते यह वृक्ष थे।
उनके ही अब ठाँव का ,देखो फसाना हो गया,
झूठ कहती आशाऐ अब तो,घर बेगाना हो गया।

किसी ने पैरो से रौंदा,कही धुँआ उठने लगा,
हवाओ ने भी तोड़कर ,इस तरह जमी पर पटका।
उनके ही अब गाँव का,देखो किनारा हो गया,
टूट गई रेखाऐ अब तो ,घर बेगाना हो गया।

ममता जिसको पालती थी स्नेह के पालना मे,
मन अपना मारती थी ,आस की सम्भावना मे।
उनके ही अब आँख का,देखो चुराना हो गया,
बदल गई भाषाऐ अब तो,घर बेगाना हो गया।

ईमान

घुटन बहुत है अँदर,
फिर भी नही मरता है ईमान।
बंद करके खिड़की और दरवाजे,
सुलगता है इमान।
घुटन बहुत है.अंदर, फिर भी नही मरता है ईमान।

सच्चाई की तीलियो पर,
झूठ के मसाले,
स्वाद भर देते है तपिश.मे,
भूख के हवाले।
भरी.हुई तीलियों से,,माचिसो मे
सुलगता है ईमान।
घुटन बहुत है अंदर, फिर भी नही मरता है ईमान।

बर्फ के पत्थर भी न पिघलते,
बन जाते है शोले,
आग उगल देते है तपिश से,
ज्यों जलते है कोयले।
अंगार बने शोलो मे,माचिसो से,
सुलगता है इमान।
घुटन बहुत है अंदर, फिर भी नही मरता है ईमान।

भावनाओ की चिता पर,
मचलती हुई लपटे,
धुंध भर देती है तपिश से,
धुंऐ की हरकते।
राख कर देती है ,माचिसो से,
सुलगता है इमान।
घुटन बहुत है अंदर, फिर भी.नही मरता है ईमान।

कंठ सुर

तुम प्रकृति का कंठ सुर,
माँ भारती वीणा तार धुन,
तेरे उद् भव का सुरम्यगान,
अधरों मे भरता सकल प्राण।

उतर अंचल से अचला तक,
झर झर गिरना झरना बनना-
फिर नदियाँ-सा चंचल बन,
कल कल स्वर से जा मिलना।
'अ' प्रथम स्वर की अभिव्यक्ति,
चिर भाषा का सकल ज्ञान,
अधरों मे भरता सकल प्राण।

ममता देती वह कंठ स्वर,
व्याकुलता पलती उस आँचल।
वत्स सुरभि स्नेहिल ज्वर,
माँ शब्द ध्वनि प्रीति प्रांजल।
'आ' द्वितीय स्वर की
अभिव्यक्ति,
मातृत्व भाव उपजा स्वर ज्ञान,
अधरो में भरता सकल प्राण।

क्षितिज द्वार पट खोल गगन,
रवि कलश लिये सतरंग चला।
स्वप्न जाल वृक्ष पात सघन,
नभ को नभचर घर छोड़ चला।
"इ ई' तृतीय स्वर की
अभिव्यक्ति,
चहक उठा विहंग स्वर ज्ञान,
अधरों मे भरता सकल प्राण।

शुष्क हृदय में टप टप करती,
वह दे जाती घनघोर बौछार।
छिड़ जाती मेंढक की टर्र टर्र,
झनकती झिंगुर की झंनकार।
"उ "चतुर्थ' स्वर की अभिव्यक्ति,
और ऋ का अनोखा स्वर ज्ञान,
अधरों में भरता सकल प्राण।

आम्र वाटिका के अमृत फल,
बसंत दूतिका करती रसपान।
बसंत ऋतु के इस मौसम का,
न देता कोई चिर वरदान।
"ऊ"पंचम स्वर की अभिव्यक्ति,
कू कू कुहूक भाव स्वर ज्ञान,
अधरों मे भरता सकल प्राण।

विरहणी

हे नाथ ! तुम जब चले,
भ्रात भाभी को लिये।
पग तुम्हारे बढ़ रहे,
साथ, उनके साथ मे।
नैन मेरे ताकते,
दूर तक है झाकते।
वह छवि सिमट गई,
रूठते वे रास्ते।
मिलन की एक घड़ी,
लखन संग जो मिली।
बन्द पलको मे किये,
जी रही वह एक कली।
रूपवान ,रूपवति,
सप्तरंग ओढ़नी ।
कान्ति रितु परिधान से,
प्रकृति मन मोहिनी।
कुम्हार सी चाक बन,
चौदह वर्ष घूमती।
तन की माटी देह बन,
विरहणी उर्मी देखती।
चढ़ गई वह चाक पर,
सृजन दीप के लिये।
दो नैन की बाती बनी,
नीर से गीले किये।
प्रेम रस मे डूबकर,
विरहणी के दीपक जले।

छोड़कर जब से गये,
नीर न बहते बन्द हुऐ।
लौट रहे है आज वह,
भ्रात भाभी को लिये।
दीपमाला से सजा दो,
सूनी यह नागरी।
मेरी लौ से जला दो,
दीपक वह पावनी।
हर तरफ हो रोशनी,
प्रेम को बिखेरती।
स्वागत के थाल लिये,
राह मै हूं देखती
तम को भी यूं सजा दो,
दीप की छाया तले।
तक रहे है नैन उसके,
नीर काजल से सने।
दूर उनसे जब रही,
छाया तिमिर की रही।
वह छाया अब प्रिय है,
मेरे ही तले रही।
तन मेरा दीप बना,
नैन फिर बाती बने।
नीर से डूबकर ,
आत्म लौ जलती रही।
तिमिर मेरे दीप की ,
एक सखी छाया बनी।

कर आलिंगन सो गई,
ध्यान मग्न ही रही।
जल गये दीपक सभी,
हो गई फिर रोशनी।
सप्त स्वरो के राग से,
गीत गाती रागनी।
कुसुम सब महक उठे,
प्रेम की सरिता बही।
राम लखन सीय को,
देख आयोध्या रही।
ऑखो मे नीर लिये ,
ह्रदय मे पीर लिये।
माता को देख कर,
तीनो ने चरण छूये।
एक दृश्य मिलन का,
प्रेम के चमन का।
रात की रानी जगी,
रात से वह जा मिली।
दो दीपक एक होकर,
मिलन की घड़ी जगी।
प्रेम की रात अनोखी,
अब विरहणी को मिली।
अतुलित दीप से जली,
प्रेम लौ से बंधी।
रोशनी ही रोशनी,
दीपावली पावन्।

पतिविहिना

है नही अपराध जिसका,
दोष फिर भी मानती वह।
परम्परा की सीढ़ियो पर,
मान आँचल बाँधती वह।
त्याग कर प्रिय देह को, अश्रु सावन हारती वह।

नेह नदिया प्रेम प्यासी ,
सागर डूबना जानती वह।
छोड़ बचपन उम्र जवानी,
टूटा दर्पण सवाँरती वह।
लिखती कहानी सब्र की, प्यार करना जानती वह।

माँग का एक लाल रंग,
चूड़ी खनकाती हाथ वह।
त्याग कर सुहाग अपना,
दान करना जानती वह।
धवल धवलित धवलिमा, सतरंग अतीत हारती वह।

सावन से भीगी हरित हिना,
सुहाग अपना मानती वह।
दोष न था दोषी फिर क्यो?
निःशब्द खड़ी एकांत वह।
संवरता दर्पण टूटा है क्यो? पतिविहिना अबला है जो।

कस्तूरी

तू कंचनमृग,
"मै" मृग तृष्णा,ढूढे तुझको, वन वन वन।

तम की धुँधली माया मे,
सूरज की निद्रा छाया मे,
कूपो की गहरी काया मे,
मन भटक रहा कस्तूरी मे,
"मै" मृगतृष्णा ढूढ़े तुझको, घट घट घट।

कोई जलने मे कोई जलाने मे,
कोई मारने मे कोई पालने मे,
कोई चिंता मे कोई चिंतन मे,
मन भटक रहा कस्तूरी मे,
"मै" मृगतृष्णा ढूढ़े तुझको, कण कण कण।

विस्मित कितना यह चंचल मन,
हर्षाता न रूप यौवन न ही धन,
उठता धुँआ और अकेला पन,
मन भटक रहा कस्तूरी मे,
"मै' मृगतृष्णा ढूढे तुझको जन जन जन।

वह कंचन मृग वह कस्तूरी,
भीतर है अपने यह मजबूरी,
वह निकट हमारे नही दूरी,
क्यो भटक रहा कस्तूरी मे,
"मै" मृगतृष्णा ढूढ़े तूझको,पल पल पल।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आ. रचना जी एक उत्कृष्ट लेखिका और कवयित्री हैं।
वर्तमान हिन्दी साहित्य कारों में एक अपनी अलग विशिष्ट पहचान बनाई है।
पिछले चार वर्षों से हमने आ. रचना जी के सृजन और लेखन को बहुत गहराई से पढ़ा, समझा और आत्म सात किया है।
तद्नुसार आपकी हर रचना पर अपनी भावाभिव्यक्तियाँ भी दी है।
हमारी दृष्टि में आ. रचना जी गीत शैली में गूँथी रचनाओं की धनी कवयित्री हैं।
नारी हृदय होने से मूलतः नारी पीढ़ा, पारिवारिक कथानक, विषय पृष्ठभूमि पर चित्रण चिंतन रहा है।
मूलतः गांभिर्य भाषा-शैली और चिंतन चित्रण है।
समाज में व्याप्त रिश्ते पर- कलह, पीढ़ा, वेदना, सहानुभूति जैसे मनोभावों पर बहुत ही कुशलता से सहज अभिव्यक्ति दी है।
यह सब वास्तविक जीवन पर आधारित और सम्बन्धित है।
सरल भाषा शैली है, सामाजिक सरोकार के विषय पर मनोभावों को बड़ी कुशलता से उकेरा है।
हिन्दी साहित्य के प्रति समर्पित भाव से लेखन, अगाध रुचि, सरल स्वभाव और सुसंस्कारित भाषा-शैली ने आपके व्यक्तित्व को भलीभांति हिन्दी साहित्य जगत में लोकप्रिय बनाया है।
हमारी शुभकामनाएँ सदैव आपके साथ हैं, आपकी लेखनी और साहित्य प्रतिभा को सादर नमन करते हैं। जी धन्यवाद जयश्रीकृष्णः जी।

रामपाल आड़ा

2.

लेखन में बचपन से अभिरुचि का ही प्रतिफल है कि एक अंतराल के बाद भी आपका लेखन परिवेश पर सजग और गहन दृष्टि रखता है । आपकी अभिव्यक्ति में विविधता और नवीनता दिखी मुझे , जो महत्वपूर्ण है।
अंतरा में " सप्ताह का कवि " बनना भी एक बड़ी उपलब्धि है।
आप सतत सृजनरत रहें और साहित्य की मूल धारणा को जीवंत रखने में सहभागी बनें । यही कामना है । पुनः **बधाई।**

देवेन्द्र सोनी' इटारसी

3.

यथा नाम तथा गुण | यही वाक्य सटीक बैठता है श्रीमती रचना सक्सेना जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर | क्यों कि आपकी रचनाऐं स्वयं आपके नाम के यथार्थ और अर्थ को अभिव्यक्त कर देती हैं | आपके लेखन और उपलब्धियों के साथ ही आपके आत्मकथ्य से यह ज्ञात हो जाता है कि आपकी लेखनी ने आपकी सोच और विचारों को किस प्रकार विविधता प्रदान करते हुए सशक्त बनाया है | आपकी कलात्मक और रचनात्मक कार्यों में रूचि का होना आपकी प्रकृति की एकाग्रता और लगन को इंगित करता है | विविध विधाओं में आपकी रूचि रचनाधर्मिता को प्रखर बनाते हुए आपको रचना बनाती है | आपकी रचनाओं में सरलता ,सहजता और सुगम्यता के साथ ही सामाजिक चिंतन का पुट समाया हुआ है , जो आपके साहित्यकर्म के प्रति समर्पण को बतलाता है |
जहाँ आपकी प्रथम रचना - "घुट जाता है दम " में सकारात्मक सोच की अभिव्यक्ति के साथ गंभीर सोच की अभिव्यक्ति हुई है ,वहीं "घर बेगाना हो गया" में व्यथा और वेदना के साथ प्रकृति की सूक्ष्म अभिव्यंजना भी हुई है | आपकी "ईमान " रचना में एक ओर चिंतन की सूक्ष्मता है तो दूसरी ओर "कंठ सुर " रचना में अक्षरों की बाजीगरी के साथ ही शब्दों की कारीगिरी है | इसी प्रकार "विरहणी" कविता में विरह की सूक्ष्म अभिव्यक्ति उजागर हुई है ,एक बानगी देखिए - नीर काजल से सने.....

व्यथा की पराकाष्ठा तब अभिव्यक्त होती है जब आपने "पतिविहिना" के लिए कहा **- है नहीं अपराध जिसका , दोष फिर भी मानती वह.....त्यागकर प्रिय देह को , अश्रु सावन हारती वह** | अंत में आपकी रचना "कस्तूरी" में रहस्यवाद का पुट समाया है | जीवन की वास्तविकता को बखान करती आपकी यह रचना भी आपके कृतित्व में चार चांद लगाती है | अनन्त हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.....

डॉ० प्रदीप कुमार "दीप"

ढ़ोसी, खेतड़ी, झुन्झुनू (राजस्थान)

4.

कवि , लेखक , साहित्यकार , समीक्षक एवं जैवविविधता विशेषज्ञ

"इस सप्ताह के कवि विशेषांक के अंतर्गत,आदरणीया श्रीमती रचना सक्सेना जी की रचनाएं पढ़ीं।

आपके आत्मकथ्य से आपकी लेखन व अन्य कलाओं में रुचि झलकती है जो कि आपको एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में आरूढ़ करती है।

"बचपन से ही पारिवारिक प्रोत्साहन के फलस्वरूप आपकी कविता लेखन की कला पनपती रही,जो आपके परिवार की साहित्य के प्रति लगाव को भी दर्शाती है।

"विवाहोपरांत लेखन का वातावरण न मिल पाने के बाद भी अपने लिखने की जिजीविषा रही जो अपने आप मे एक मिसाल ही है।

"घुट जाता है दम" कविता की कुछ पंक्तियां बहुत ही लाजबाब जान पड़तीं हैं,जो अतृप्त प्यार का मार्मिक चित्रण हैं,तथा "ईमान"रचना में मानव मन के घुटन व तड़पन का बहुत ही उम्दा अंतर्द्वंद प्रस्तुत करती है,"कंठ सुर"में बसन्त ऋतु की सुंदरता का मनमोहक चित्रांकन किया गया एवम,"विरहणी कविता लक्ष्मनपत्नी उर्मिला की विरह वेदना का जीवंत चित्र है।"पति विहीना" काव्य विधवा नारी के सम्पूर्ण जीवन पथ का दर्शन कराती है। "कस्तूरी"रचना मन की मृगमरीचिका में घिरे। भावों को व्यक्त

करती हुई स्वयम के अस्तित्व को तलाश कर संवारने के विचार कराती है।"

"इस प्रकार से रचना जी ,की रचनाएं यथा नाम तथा गुण अर्थात सुंदर कृतियों के द्वारा सम्वेदना का पल्लवन करतीं परिलक्षित हो रहीं हैं।

"रचना जी, आपको आपकी साहित्यिक यात्रा हेतु अनन्त शुभकामनाएं व बधाइयाँ व अनवरत साहित्य यात्रा के लिये ढेर सारी मंगलकामनाएं।"

नवनीता दुबे "नूपुर", मण्डला

5.

मनुष्य को भावनाओं का पुतला कहा गया है। जिस व्यक्ति में भावनाएं नहीं, वह और कुछ तो हो सकता है पर मनुष्य नहीं। ये भावनाएं अभिव्यक्त होने के लिए विभिन्न माध्यमों का सहारा लेती हैं। कविता या पद्य इन सब में सबसे अधिक सशक्त और संप्रेषित होने में सक्षम माध्यम है। **यह भी एक तथ्य है कि अंदर से हर आदमी कवि ही होता है।** यह अलग बात है कि हममें से अधिकांश अपनी अभिव्यक्ति को कविता या पद्य के माध्यम से प्रस्तुत नहीं कर पाते।

रचना जी ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पद्य और गद्य दोनों माध्यमों को चुना है। इसके पीछे उनके परिवार का शैक्षणिक वातावरण ही कारक रहा होगा। विवाहोपरांत लेखन कुछ समय तक बाधित रहने के बावजूद बीज के सुरक्षित रहने से पुनः अंकुरण संभव हुआ।

जहाँ तक रचना जी की आज पटल पर प्रस्तुत रचनाओं का प्रश्न है तो ये सभी रचनाएं सहज सरल और भावपूर्ण हैं। जीवन के सामान्य सरोकारों को संबोधित हैं। **शाब्दिक क्लिष्टता और भावों की दुरूहता से परे रचना जी ने अपने कथ्य को सरल रखने का प्रयास किया है**। किंतु शिल्प और कहन के स्तर पर और परिश्रम आवश्यक लगता है। टंकण त्रुटियों की ओर ध्यान देना भी अपेक्षित है, वर्ना अर्थ का अनर्थ होते देर नहीं लगती। रचना जी संभावनाशील कवियत्री हैं। निरंतर लेखन उन्हें निश्चित रूप से

एक अच्छी कवियत्री के रूप में स्थापित करने में सहायक होगा।

उन्हें बहुत बहुत शुभकामनाएं।

"सत्यप्रसन्न"

7.

सर्वप्रथम रचना जी को काव्य साधिका और अन्तरा शब्दशक्ति के-'**सृजक-समीक्षा विशेषांक-सृजन**' में शामिल होने की **बधाई।**

घुट जाता है दम

एक आम समस्या को एक रचनाकार ही सुरम्य शैली में प्रस्तुत कर पाता है यही उसे कविलेखक बनाता है।/

घर बेगाना हो गया,

मौसम का बहाना हो गया कड़वा मगर सच!

ईमान

हर इंसान के भीतर ईमान चुप है पर व्यवहार में हो रही घटनाओं की घुटन को रचनाकार ने बखूबी चित्रित किया है।

कंठ स्वर

उतर अंचल से अचला तक प्रकृति और स्वरअक्षर की जुगलबंदी का बहुत / ही सुंदर।

विरहणी में उर्मिला की विरह वेदना हृदय बेधती हुई ।

पतिविहिना एक बहुत ही संवेदनशील और यथार्थवादी रचना।

कस्तूरी में रचनाकार का दार्शनिक अंदाज़।

सभी रचनाएँ एक से बढक़र एक। कहींकहीं टंकण की त्रुटियां पाठक को - बाधित करती है।**शिल्प और कथ्य बेहतरीन**। आप उत्तरोत्तर प्रगति करें। **साहित्य यात्रा अनवरत चलती रहे**। इन्हीं शुभ भावों के साथ,...

प्रीति सुराना

वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दी ग्राम
भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com